International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-08-2024, Accepted: 17-09-2024, Published: 02-10-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 1-4

प्रतिरोध की कविता और रमाशंकर यादव 'विद्रोही' की काव्य–चेतना

सुनील चौधरी
हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
इस शोध–पात्र के अंतर्गत रमाशंकर यादव 'विद्रोही' को जान्ने समझने के साथ ही यह प्रयास किया गया है कि उनके कृतित्व की परम्परा को समझने के साथ ही उनके मिजाज को जाना जाय । विद्रोही लगातार कोशिश करते रहे थे कि जहाँ भी कमी हो उसे सुधारने का प्रयास पूरी ताकत के साथ किया जाना चाहिए। वे आजीवन आन्दोलनों में शामिल होते रहे और मनुष्य के पक्ष में अपने बयान देते रहे। उनकी हस्तक्षेप करने की कोशिश ही उनको विद्रोही बनाती है और कमजोरों के पक्ष में फैसला सुनाती है। जिसके परिणाम जल्द ही बेशक न मिले हों लेकिन भवष्य को बेहतर बनाने के लिए आज को बेहतर बनाना बहुत आवश्यक है और रमाशंकर भी वही कार्य करते नजर आते हैं।

मूल शब्दः धर्म, समाज, प्रेम, परिवर्तन, स्त्री, इतिहास

विद्रोही कबीर व बाबा नागार्जुन की परंपरा के कवि हैं वे कबीर की तरह धर्म व समाज के प्रति अपनी चिंता जाहिर करते हैं तो साथ ही साथ बाबा नागार्जुन की तरह सीधे सत्ता से टकराते हैं। विद्रोही अपने प्रतिरोध की कविता में भारतीय संस्कृति और इतिहास का अत्यंत सर्जनात्मक उपयोग करते हैं। यह सब वही रच सकता है जिसका चेतना स्तर बहुत ऊंचा हो। चेतनाशील मनुष्य सत्ता के सामने झुक भी सकता है लेकिन विद्रोही सत्ता से संघर्ष करते हैं। वे मनुष्य के हक के लिए लड़ बैठते हैं। विद्रोही का ज्ञान कोरा ज्ञान नहीं है । उन्होंने निरंतर अनुभवों से सीखा है और उनकी कविताओं सिर्फ कविता नहीं होती बल्कि उनकी कविता समाज के लिए आईने का कार्य करते हैं। विद्रोही भी कविता को परिभाषित करते हुए अपनी कविता 'परिभाषा' में लिखते हैं कि–

"कविता क्या है
खेती है
बेटा बेटी है
बाप का सूत है
माँ की रोटी है।"[1]

उनकी कविताएँ सहज प्रकट होने लगती है और देखते ही देखते एक पहाड़ की तरह सत्ता के सामने चुनौती बनकर खड़ी हो जाती हैं। विद्रोही भारतीय समाज को ठीक से जानते हैं। वे बताते हैं कि, "मैं किसी से कुछ बोलता नहीं हूँ, किसी का कोई प्रतिवाद नहीं करता हूँ।
विद्रोही की चेतना जब विकसित होना शुरू करती है, तो वे बताते हैं कि उनकी तीन बहनों ने सिर्फ प्रेम करना सिखाया है ,लेकिन पूंजीवादी चौपालो ,सामंती दलालों ,औरत के बिकते तन और मुर्दे के बिकते कफन 'विद्रोही' को विद्रोही बनाने का कार्य करते हैं। वे अपनी कविता 'इक आग का दरिया है' में लिखते हैं–

"मैं कवि हूँ
तीन–तीन बहनों का भाई हूँ
हल्दी दूब और गले कि हुलसी से
चूम–चूम कर
बहनों ने प्यार करना सिखाया है मुझे
मैंने कभी नहीं सोचा था
कि मेरे प्यार का सोता सूख जाएगा
लेकिन पूँजीवादी समाज की चौपालों !
और सामंतवादी समाज के दलालों !
औरत का तन और मुर्दे का कफनदेखकर
मेरे प्यार का सोता सूख गया
मेरे प्रेम का दूर्वांकुर मुरझा गया।"[2]

इस प्रेम और विद्रोही प्रवृत्ति के बीच बढ़ते हुए विद्रोही ने प्रेम को भुलाया नहीं हमेशा चाहा कि स्थितियों का निराकरण प्रेम से ही हो लेकिन सत्ता के भूखे शेरों ने 'विद्रोही' को विद्रोह करने के लिए इतना मजबूर किया कि श्विद्रोहीश स्वंय के बारे में यह कहने लगे कि, "मैं कितना टेरिबल हो गया हूँ, कितना भयानक हो गया हूँ, कि मुझे छूने की हिम्मत इन लोगों की नहीं पड़ रही है और फिलहाल मामला चल रहा है।"[3] इसका असर उनकी कविता 'दूध–पानी' में देखने को मिलता है जब वे कहते हैं कि–

जाओ कह दो
मौत के सौदागरों से
कि वे जब भी हमारे पास आएँ
तो कुछ सोच कर आएँ
क्योंकि जो भी मेरे पास आता है
तो मेरा हो जाता है
नहीं तो वही मर जाता है।[5]

विद्रोही से जब प्रश्न पूछे जाते हैं तो वे सभी प्रश्नों का सटीक जवाब अपनी कविताओं से ही देते हैं। लोगों में हमेशा जिज्ञासा बनी रही कि विद्रोही तो फक्कड़ की तरह घूमते हैं आखिर करते क्या हैं? और लोग व्यंग करने के लिए उनसे पूछते भी रहे होंगे कि विद्रोही क्या करते हो? वे इसका जवाब अपनी कविता 'कवि–कर्म' में देते नजर आते हैं –

जब कवि गाता है
तब भी कविता होती है
जब कवि रोता है
तब भी कविता होती है
कर्म है कविता
जिसे मैं करता हूँ

फिर भी लोग मुझसे पूछते हैं –
विद्रोही तुम क्या करते हो?[4]

विद्रोही अपनी कविताओं में पौराणिक कथाओं व इतिहास को अपनी दृष्टि से परखते हैंऔरअपनी काव्य चेतना के बल पर उसका विरोध करते हुए नजर आते हैं। वे अपनी कविता हनुमान में यह दिखाते हैं कि रावण के दरबार में तेल और कपड़ा बेशक बढ़ता गया हो और तुमने आग भी लगा दी। लेकिन यदि यही आग तुम मेरे घर में लगाते तो तुम्हारा क्या होता?
इसी तरह वे 'नयी खेती' कविता में भगवान को चुनौती देते हैं उसको चुनौती देने के लिए धान को उसके सामने रखते हैं और ईश्वर की सत्ता से सीधे टकराते हैं वे लिखते हैं कि–

"मैं किसान हूँ
आसमान में धान बो रहा हूँ
कुछ लोग कह रहे हैं
कि पगले आसमान में धान नहीं जमता मैं कहता हूँ कि
गेगले–गोगले
अगर जमीन पर भगवान जम सकता है तो आसमान में धान भी
जम सकता है और अब तो
दोनों में से एक होकर रहेगा–
या तो जमीन से भगवान उखड़ेगा
या आसमान में धान जमेगा।"[5]

वैसे तो रामायण का जिक्र इतिहास में आता है और सीता और राम के बहाने बहुत सी बातें भी होती रही हैं। लेकिन विद्रोही का ध्यान इन बातों पर नहीं जाता । विद्रोही को तो सिर्फ उस धोबिन की चिंता है जिसकी वजह से सारा काण्ड हुआ और वे सोचते हैं कि, क्या कोई उसके वंश में आज भी जीवित बचा होगा या नहीं? क्योंकि राजा के सामने एक गरीब बचा ही कहाँ रहता है । उनकी कविता 'तुम रहने कहाँ देते हो' की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

लेकिन उस धोबन का पता नहीं चलता
जिसके कारण सारा कांड काण्ड हुआ था
धोबी ने धोबन को रखा कि छोड़ा
पंचायत ने दण्ड ठोका कि माफ किया
क्या कोई होगा उसके वंश खूँट में
मेरा मन कहता है
कि जरूर बचा होगा कोई ना कोई उसके वंश में
उधर अपने धोबियाने में पता करना मेरे दोस्त![6]

विद्रोही निरंतर भगवान पर मस्जिद पर ,मंदिर पर तंज कसते हैं और लोगों को सचेत करते हैं कि– स्वंय को पहचानो । जो करना है तुम लोगों को ही करना है। यदि तुम अपने हक के लिए नहीं लड़ोगे तो, तुम्हारे हक के लिए लड़ने कोई भगवान नहीं आने वाला और बिन लड़े कोई परिवर्तन भी नहीं होगा। विद्रोही अपनी कविताओं–'डर मत! बढ़ चल!',10' तुम्हारा भगवान '11, 'तोड़ डालो मंदिरों को फोड़ डालो मस्जिदें',12' सवाल आदमी का है।'13 और 'हम गुलामी की अंतिम हदों तक लड़ेंगे' 14 आदि में मनुष्य को अपने हक की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित करते व कबीर की तरह बेबाकी से अपनी बात कहते नजर आते हैं।वे मनुष्य पर मनुष्य को विश्वास करने को कहते हैं। इन्हीं की कविता 'डर मत! बढ़ चल!' दृष्टव्य है –

ए मेरे लोगों
तुम उठो उठो और
ढहा दो सारी दीवारों को
जो रोके हुए हैं
ताजी हवा को
ताजे पानी को
ताजे विचार को

साथ ही साथ श्तुम्हारा भगवानश कविता में वे भगवान को पत्ते की गाय के रूप में प्रस्तुत करते हैं ताकि जनता समझ सके कि यह सब मनुष्य के बनाए गए पाखण्ड हैं और अपने हक के लिए स्वंय लड़ सकें। पंक्तियाँ इस प्रकार हैं कि–

तुम्हारा भगवान पत्ते की गाय है
जिससे तुम खेल तो सकते हो
लेकिन दूध नहीं पा सकते।[7]

और विद्रोही व्यवस्था के समाधान के लिए मनुष्यों का ही आह्वान करते हैं साथ ही वे दबे कुचले व पीड़ितों के पक्ष में ही खड़े होते हैं। वे 'चूहे के पक्ष में बयान' कविता में लिखते हैं–

"चूहा हाथी पर चढ़ जाता है
लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं होता
कि हाथी चूहे पर चढ़ सकता है।"[8]

वे उन वहसी ,दरिंदों को जनता की ताकत का एहसास कराते हैं कि जनता जब विद्रोह करती है तो वह तुम्हारी तरह जुल्म नहीं करती बल्कि सुस्ता–सुस्ता कर मारती है। कविता 'जन प्रतिरोध' की पंक्तियाँ इस तरह हैं कि–

बड़ा भयंकर बदला चुकाती है ये जनता
ये जनता तुम वहशियों की तरह
बेतहाशा नहीं पीटती
सुस्ता–सुस्ता कर मारती है ये जनता।

स्त्री व्यथा का जैसा चित्र विद्रोही ने खींचा वैसा चित्र खींचना मुश्किल भरा काम था। इतिहास में माँ को समर्पित कविताएँ भरी पड़ी हैं।बेटी को संबोधित कर निराला ने 'सरोज स्मृतिश्लिखी। लेकिन विद्रोही अपनी नानी पर कविता लिखते हैं, दादी और नूर मियाँ के काजल के रिश्ते से समाज तक पहुँचते हैं। वे अपनी नानी के बारे में अपनी कविता 'नानी' में लिखते हैं कि–

मेरे जेहन में मेरी नानी की तस्वीर
कुछ इस तरह से उभरती है
जैसे बाजरे के बाल पर गौरेया बैठी हो।

और जब –जब नानी याद आती है तो कवि को लगने लगता है कि उसका भी जाने का समय निकट आ लिया है। वे लिखते हैं–

और मेरी देह, मेरी समूची देह
एक पत्ते की तरह थर–थर काँपने लगती है
जो कि अब गिरा की तब गिरा
अब गिरा कि तब गिरा। 20

इस तरह के उपमान अज्ञेय के यहाँ भी मिलते हैं जब वे अपनी प्रेमिका को कविता 'कलगी बाजरे' में बाजरे की कलगी से तुलना करते हैं। लेकिन विद्रोही अपनी प्रेमिका के सौंदर्य से प्रभावित नहीं है बल्कि वे अपनी प्रेमिका को देखकर महसूस करते हैं कि अब क्रांति होगी । वे अपनी कविता' इक आग का दरिया है' में लिखते हैं कि–

मैं तुम्हें इसलिए प्यार नहीं करता
की तुम बहुत सुंदर हो
और मुझे बहुत अच्छी लगती हो,
मैं तुम्हें इसलिए प्यार करता हूँ
कि जब मैं तुम्हें देखता हूँ
मुझे लगता है
क्रांति होगी
तुम्हारा सौंदर्य मुझे
बिस्तर से समर की ओर ढकेलता है।

प्रेमिकाओं को गुलाब देने की परम्परा भारतीय इतिहास में रही है और आधुनिक समय में तो यह प्रचलन और भी बढ़ा है, लेकिन विद्रोही अपनी प्रेमिका के हाथ में क्रांति के लिए बंदूक तक थमा देते हैं। इस भारतीय काव्य परंपरा में किसी कवि ने लिखा हो। वेकविता 'इक आग का दरिया है' में लिखते हैं कि–

मैं सोचता हूँ
तुम्हारे हाथ में बंदूक बहुत अच्छी लगेगी
और उसकी एक भी गोली बर्बाद नहीं जाएगी।

विद्रोही प्रेमिका और नानी का जिक्र करने के साथ ही साथ दादी के बहाने बँटवारे के समय गए चले गए 'नूर मियाँ' को याद करते हैं। और बताते हैं कि किस प्रकार दादी के लिए 'नूर मियाँ' च्यवन ऋषि हैं और नूर मियां का सुरमा दादी की आंखों का च्यवनप्राश है और वे इस धर्म से अलग बने रिश्ते की बारीकियों का जिक्र करते हैं। वे अपनी कविता 'नूर मियाँ का सुरमा' में लिखते हैं कि–

"और वही नूर मियाँ पाकिस्तान चले गये
क्यों चले गए पाकिस्तान नूर मियाँ?
कहते हैं नूर मियाँ के कोई था नहीं
तब क्या हम कोई नहीं होते थे नूर मियाँ के
नूर मियाँ क्यों चले गए पाकिस्तान?
बिना हमको बताये
बिना हमारी दादी को बताये।"[9]

विद्रोही स्त्रियों के लिए पुलिस का रिकॉर्ड हों, धर्म की किताब या वसीयत सभी को वे खारिज करने की वकालत करते हैं और औरतों के हक की बात करते हैं। असल स्थितियों को दर्शाने के लिए वे मरी औरतों को फिर से जिंदा करके न्याय दिलाने का प्रयास करते हैं क्योंकि वे न्याय पसंद कवि हैं। अपनी कविता 'औरत' में लिखते हैं कि–

मैं कवि हूँ
कर्ता हूँ
क्या जल्दी है
मैं एक दिन पुलिस और पुरोहित
दोनों को एक ही साथ
औरतों की अदालत में तलब करूँगा।। 24

विद्रोही को समाज का ज्ञान निरंतर बना रहा है। वे जानते हैं कि एक औरत किस प्रकार से अपना जीवन जीती है। किस प्रकार से उस पर निरंतर अत्याचार होते हैं । वह अपनी कविता 'औरत' में लिखते हैं कि–

मैं उस औरत के बारे में जानता हूं
जो कि एक बित्ते के आंगन में
अपने सात बित्ते की देह को
ता–जिंदगी सजोये रही
कभी भूलकर बाहर की तरफ झाँका तक नहीं ।25

और कवि साथ ही साथ भविष्य के लिए समाधान प्रस्तुत करता है, कि जो आज तक होता रहा गलत होता रहा लेकिन भविष्य में कुछ गलत नहीं हो इसके लिए हमें कुछ करना होगा। वे इतिहास में दफन औरतों को अपनीश मां श्कहकर पुकारते हैं और भविष्य में अपनी बेटियों के लिए अपनी चिंता जाहिर करते हैं । अपनी 'औरत' कविता में लिखते हैं कि–

इतिहास में वह पहली औरत कौन थी
जिसको सबसे पहले जलाया गया
मैं नहीं जानता
लेकिन जो भी रही होगी
मेरी मां रही होगी
लेकिन मेरी चिंता यह है कि
भविष्य में वह आखिरी औरत कौन होगी
जिसे सबसे अंत में जलाया जाएगा
मैं नहीं जानता
लेकिन जो भी होगी–
मेरी बेटी होगी
मैं यह नहीं होने दूंगा।

विद्रोही चिंतित है कि क्या कारण है कि प्राचीन सभ्यता के मुहाने पर एक औरत की जली हुई लाश मिलती है? जो माँ, बेटी, बहिन थी उसी को क्यों जलाया गया? अनेक प्रश्न हैं जो कि विद्रोही की कविताओं से गुजरे हुए इतिहास के बारे में सोचने को मजबूर करते हैं । विद्रोही अपनी कविता 'मोहनजोदड़ो की आखिरी सीढ़ी से' में लिखते हैं कि–

मैं सोचता हूँ और बारहा सोचता हूँ
कि आखिर क्या बात है कि
प्राचीन सभ्यता के मुहाने पर
एक औरत की जली हुई लाश मिलती है
और इंसानों की बिक्री हुई हड्डियाँ मिलती हैं । 27

औरतों पर होने वाले अत्याचार का कारण विद्रोही मर्दो को और पितृसत्ता को मानते हैं और पितृसत्ता के आने का कारण इतिहास से ही स्पष्ट करते हैं। वे कहते हैं कि –

इतिहास में पहली स्त्री हत्या
उसके बेटे ने अपने बाप के कहने पर की
जमदग्नि ने कहा, ओ परशुराम!
मैं तुमसे कहता हूँ कि अपनी माँ का वध कर दो
और परशुराम ने कर दिया
इस तरह पुत्र, पिता का हुआ
और पितृसत्ता आई। 28

विद्रोही धर्म और जाति व्यवस्था के घोर विरोधी हैं। वे धर्म के ठेकेदारों के कारनामों को गिनाते हैं और उनके अत्याचारों से एक–एक कर समाज के सामने लाने का कार्य करते हैं। वे 'धर्म' कविता में लिखते हैं कि–

जिनकी हथेलियों पर टिका हुआ है सदियों से यह लिंग,
ऐसे लिंगथापको की माँए
खीर खाकर बच्चे जनती हैं
और खड़ी कर देती हैं नरपुंगवो की पूरी जमात
मर्यादा पुरुषोत्तमौ के वंशज

उजाड़ कर फेंक देते हैं शम्बूकों का गाँव
और जब नहीं चलता इससे भी काम
तो धर्म के मुताबिक
काट लेते हैं एकलव्यों का अंगूठा
और बना देते हैं उनके खिलाफ तमाम झूठी दस्तखतै। 29

विद्रोही बताते हैं कि एक ब्राह्मण का बेटा किस प्रकार जीता है । भूमि जिनकी होती है उनके गांव में गरीब क्या होते हैं? और दान–दक्षिणा पाने के लिए किस प्रकार गरीबों को नरक के द्वार दिखाए जाते हैं । उनकी कविता 'धर्म' द्रष्टव्य है–

क्योंकि बाभन का बेटा
बूढ़े चमार के बलिदान पर जीता है
भूसुरों के गांव में सारे बाशिंदे
किराएदार होते हैं।
ऊसरों को तोड़ती आत्माएँ
नरक में धकेल दी जाती हैं
टूटतीजमीनें गदरा कर दक्षिणा बन जाती हैं। 30

यह 'आसमान में धान बोने वाला कवि' गया भी तो संघर्ष करते हुए और अपनी कविता श्मोहनजोदड़ो की आखिरी सीढ़ी सेश में लिखता रहा कि–

मुझे बचाना अपने पुरखों को बचाना है
मुझे बचाना अपने बच्चों को बचाना है
तो मुझे बचाओ
मैं तुम्हारा कवि हूँ। 31

लेकिन अफसोस हम अपने जनकवि को बचा न सके और 8 दिसंबर 2015 को जलता हुआ दीपक 'ऑक्युपाईयू.जी.सी.' आंदोलन से जूझता हुआ अचानक बुझ गया। परंतु उनकी कविताओं और विचारों की ज्वाला सदैव ही जलती रहेगी।
मैं अपने शोध पत्र के द्वारा चिंतकों व आलोचकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि विद्रोही जैसा कवि जो कि जनकवि नागार्जुन व कबीर की परंपरा में पड़ता है। जो कि समाज को एक अलग तरह से देखकर जगह– जगह पर समाधान भी प्रस्तुत करता है ऐसे कवि को पढ़ा जाना अभी बाकी है और शोध किया जाना भी बाकी है। यहाँ पर विद्रोही की कविता के विषय में बताने का प्रयास मात्र किया गया है जब कि विद्रोही की कविताओं का संसार बिखरा पड़ा है जो कि सम्पूर्ण विश्व को अपनी कविताओं में समेटे हुए है।

संदर्भ सूची

1. नयी खेती; रमाशंकर यादव विद्रोही, नवारुण प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2018, गाजियाबाद, पृष्ठ 24
2. नयी खेती; रमाशंकर यादव विद्रोही, नवारुण प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2018, गाजियाबाद, पृष्ठ 38
3. https://youtu.be/sGRLi11GneU?si=pbXCKChRrfgkR13I
4. नयी खेती; रमाशंकर यादव विद्रोही, नवारुण प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2018, गाजियाबाद, पृष्ठ 65
5. नयी खेती; रमाशंकर यादव विद्रोही, नवारुण प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2018, गाजियाबाद, पृष्ठ 12
6. नयी खेती; रमाशंकर यादव विद्रोही, नवारुण प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2018, गाजियाबाद, पृष्ठ 34
7. नयी खेती; रमाशंकर यादव विद्रोही, नवारुण प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2018, गाजियाबाद, पृष्ठ 50
8. वही, पृष्ठ 52
9. http://kavitakosh.org/kk/नूर–मियाँ